ॐ

I

श्री गणेशाय नमः, श्री सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, निर्विकार, ब्रह्मा विष्णु
महेश, सर्वेश्वर, पवनसुत हनुमान जी की सेवा में आराधना है
यदि आप लोगों की सहायता व विशेष कृपा मुझ पर हुई तभी
मैंने इस मनोजनक विचार - विमर्श कर के जो कार्य करने को
सोचा है उसमें सफलता मिलेगी इसलिये सर्व प्रथम श्री
ब्रह्मा, विष्णु, महेश से प्रार्थना करती हूँ कि लेखनी में तथा
हृदय की विचार-धारा, स्मरण - शक्ति में साहस व लगन का
समावेश इस सीमा तक कर दीजिये कि कार्य सम्पूर्ण हो।
अचानक यह भावना उत्पन्न हुई कि कुछ लिख ही
डालूँ जीवन की परिभाषा, उतार चढ़ाव, परिवर्तन, किस
प्रकार कहाँ से कहाँ आया। अपनी जो जिन्दगी थी
detail उसको विस्तार में लिखने में कोई लाभ नहीं उसमें तो
हर प्रकार की परिस्थितियों का सामना करके अपने
duties सारे कर्तव्यों को पूरा कर दिया। सोचा कि अब
involve बहुत अधिक गृहस्थी में न रह कर कुछ
परलोक की तैयारी करूँ पर वह हो नहीं सका
दिमागी हलचल चल रही है। क्या कुछ जीवन के
step लिये थे क्या ठीक थे ?
मैंने किसी सम्पन्न आदर्श परिवार में जन्म
लिया ऐसे ही परिवार में ब्याह भी हो गया वहाँ
माँ बाप की अकेली बेटी थी पर अकेलापन क्या नहीं
अपने पाँच भाई, दो, तीन चचेरे, जिनको कुछ हुई
सारा था बहुत बड़े परिवार का साथ व व्यवहार में
थी। यहाँ भी अकेली बहू अपने सास ससुर की
एक ही ननद, पति देवता ननिहाल में चौदह मामा
मौसी में अकेले अपने यहाँ तीन भाइयों में
अकेली सन्तान थे पर ये लोग भी बहुत दूर २
परिवार, रिश्तेदार, दोस्त आदि के बीच में पले
थे कि सभी को आदर्शवाद का नियम निभाना
आता था। समयानुसार इन लोगों का विचार - संस्कार

बहुत धूमधाम यानी कुछ भी नहीं शेष रखा गया
साधु, महुला, राजा, महाराजा, आफिसर, वकील, पंडित
ब्राह्मण, नौकर, बेगार, चमार सभी का समावेश था
तथा कर्तव्य पालन पर लोग डटे थे।
मनोरंजन के लिये भी कुछ उठा नहीं रखा
गया। मास्टर राहत, संगीत मंडली पुराने समय में
जो बारातों में चलती थी सभी कुछ आयोजित
किया हुआ था जिससे हर प्रकार के लोगों ने
अपने २ इच्छानुसार मनोरंजन प्राप्त किया। शायद
आतिशबाजी भारत वर्ष की उत्तम श्रेणी वाली थी उसका
ज्ञान होने नहीं है पर पुराने लोगों से उसकी
प्रशंसा बहुत अधिक सुनती रही। मैंने उसे देखा
भी नहीं क्योंकि उस जमाने में लड़की बारात के
सामने लाने का रिवाज नहीं था। यह परिवर्तन
भारतवर्ष में धीरे २ होता गया और हम लोगों
ने उसे स्वयम्बर का रूप धारण कराया
और जयमाल से प्रथम रस्म वर-कन्या का
advance आरम्भ हुआ। इस रस्म में कुछ और प्रगति
हुई और Ring ceremony से engagement
हुआ जिसे पहले बरिच्छा (फलदान) कहते थे
उसमें कन्या कुछ भाग नहीं लेती थी।
यह सब तो जमाने का परिवर्तन था व है
उसके लिये भागना या प्रबंध करना स्वाभाविक था
Stand and फैशन के पर बहुत ध्यान सभी का जाने
limit लगा पर मैंने उसमें कुछ किया क्योंकि
मेरी बहुत अधिक थी।
responsibilities

मेरे सास ससुर ने कुछ राजसी ढंग को
अपनाया था यानी घर मकान आलीशान, नौकर चाकर
[illegible], घोड़ा गाड़ियाँ, फूल फुलवारी का आयोजन

3

शौक़, राजा, बाबू का आवागमन (कारण पेशा व बहुत चढ़ाव पर ससुर जी का था) उनका स्वागत, आवभगत और उनके सम्मुख सब कुछ दिख का जैसे चांदी की तश्तरी, पान दान सहित, हुक्का आदि लखनऊ का, कभी कभी दावत नवाजों में. खाना पीना काश्मीरी ब्राह्मणों से बनवा कर बहुत luxurious dishes खिलाना पर शाकाहारी। अ स्वयं का जीवन बहुत सादा, आदर्श वादी (simple living, high thinking) बना कर रहना भी निभा रहे अपने पुत्र व पुत्री को सत्यवादी, कर्तव्य परायण, व्यवहारिक आदि बना देने का पूरा प्रयत्न क साथ में पूजा - पाठ मन्दिर की स्थापना भी में थी उसमें नियमित रूप से पूजा-आरती, क प्रसाद मासिक व दैनिक विधिवत निभा रहे थे और पुत्र पुत्री भी शिक्षा पा रहे थे।

उसी परिस्थिति के मध्य मेरा प्रवेश उस परिवार में हुआ, मेरा स्वागत विधिवत किया गया हर item से हर को कुशल-पूर्वक सजावट, नाच, गाना, बाजा, शहनाई से परिपूर्ण किया गया। उसका सम्पूर्ण वर्णन कोई विशेष उपयुक्त नहीं है केवल मतलब यह व है (क्योंकि बहुधा याद आ जाता है) कि भविष्य आये हुये परिवार समझ सकें कि मैंने अपने जीवन में कितने परिवर्तन किये? उसका विवरण हुई प उस समय जब कि मैं शान्ति की खोज में थ और उसे प्राप्त करने में कितनी कठिनाई व विवशता है उसे वर्णन करने में कुछ पुरानी याद आवश्य आवेंगी।

मेरा अपना जीवन 18th May 1931 में बस्ती (उन दिनों शहर होते हुये कस्बा जैसा था) में प्रारंभ हुआ। उस छोटी जगह में बहुत कड़

मकान, Luxury का सारा सामान, मोटर, लैण्डो गाड़ी, गाय भैंस सब कुछ अपना था केवल शहर में बिजली उपलब्ध न होने कारण लैम्प, लालटेन व पेट्रोमैक्स की सुविधाजनक प्रबन्ध था। मेरे ससुर जी ने मेरा बहुत ख्याल रखा और अपने ideals को पूरा करने के लिये मुझे ट्रेनिंग देना शुरू किया। सम्बन्ध सम्पर्क develope में आरंभ ही से थी उसे करने में उनको कोई कठिनाई नहीं हुई उन्होंने 3½ वर्ष में अपने ध्येय व विचारानुसार मुझे घर को सम्हाल कर रखने, सभी का आदर-सत्कार, सबकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना, सत्य, धर्म, पूजा पाठ नियमित रूप से करना, परिवार का prestige निभाना तथा कर्तव्य-पालन पर आरूढ़ रखने की पूरी शिक्षा दिया। उन्होंने मेरी English की परीक्षा लिया और कहा English की knowledge स्वयं पढ़ २ कर बढ़ा सकती हो हिंदी में यदि लेख लिखना चाहो तो लिखा करो मैं छपवा दिया करूंगा। पर विघ्न बाधायें भी बहुत थीं २, ३ बार कभी मैं बिमार कभी पति देव लखनऊ में मकान किराये का लेकर दवा का प्रबन्ध भी उच्च-कोटि का करते थे।

चार वर्ष पश्चात २ मई 1943 में बड़ी बेटी का जन्म हुआ, काम व जिम्मेदारी बढ़ी उसके 6 माह बाद ननद के ब्याह का प्रबन्ध आरंभ हुआ उसका भी standard साधारण नहीं था शहर में बिजली उपलब्ध नहीं होते हुये भी 4 दिन Tourist Movie मंगा कर आयोजित किया गया था और शुगर मिल्स से बिजली connect कराई गई। इसी प्रकार 16 वर्ष तक उनके राज्य में उनकी आज्ञाकारिणी और सुशीलिणी बहू का पद पाकर बहुत ही आनन्द जीवन बिताया [illegible]

सुषमा तक आठ बच्चे अपने, पांच ननद के जन्म तथा अनेकों जन्म-गांठ, मुंडन, देहज की रस्में सम्पन्न की गईं उसका विवरण देना कुछ अनुचित नहीं है

सन् 1950 में एकाएक जीवन ने पलटा खाया। दो महीने के अन्दर तीसरी बेटी इन्दु का निधन तथा उसके आठवें दिन तीसरा बेटा अनूप

accident

(मइया) की आकस्मिक मृत्यु दस मिनट में अंगूर की लता के खम्भों के नीचे दब कर हुई। इस दुर्घटना का दुष्प्रभाव हम पर जो पड़ा वह स्वाभाविक व असह्य हो गया था। हमारे ससुर जी इन घटनाओं के समय छुट्टियों में कहीं बाहर गये थे हमारे बच्चों से बेहद उन्हें प्यार था इससे सभी को डर था कि उनके

Shocking

लिये बहुत ✓ होगा उनके लखनऊ वापस आने पर डाक्टर की राय से दवा खिला कर सूचित किया गया उस दवा के प्रभाव से देखने में अधिक विक्षिप्त-दशा में नहीं हुये पर भीतरी मानसिक पीड़ा को दबा कर अपना कोर्ट का काम आरम्भ कर दिये और सवा महीने में कोर्ट में बहस करते समय brain hemorrhage से coma में आने के 3 घंटे बाद स्वर्गवासी हो गये।

यह वर्ष हम सभी के लिये बहुत ही कठिनाई, परिवर्तन और असुविधाओं का सामना करने वाला था। हमारा कर्तव्य बहुत अधिक बढ़ गया। पूरा परिवार, स्वास्थ्य, विद्याध्ययन, घर के सारे व्रत त्योहार नियमित रूप से निभाते हुये परिस्थिति पर पूरा Control किया। बस्ती के कान्वेंट स्कूलों में Inter (XII) के बाद कुछ नहीं था बच्चों का admission VI class की कक्षा बड़ी बेटी को XII, B.A., M.A. गोरखपुर व कानपुर

(Agra university) से किया। 5,6 ट्यूटर लगाना विद्याध्ययन को जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया जो कि वहां रह कर बहुत difficult और expensive होता जा रहा था। इसके अतिरिक्त medical facilities का वहां अभाव था। इससे हम लोगों ने लखनऊ रहना शुरू कर दिया सभी लड़कियां व लड़के स्कूल, कालेज व युनिवर्सिटीज में यथावत पढ़ने लगे। पढ़ने का प्रबन्ध बहुत अच्छा हो गया। 1956 से 1973 के मध्य में बहुत ही व्यस्त जीवन बिताया दोनों बेटों ने I.I.T. से पास किया, लड़कियों ने भी बी.ए. एम ए की डिग्री प्राप्त किया हमारे भांजे, भांजी भी साथ रहे सभी का education व ब्याह-संस्कार इन 17 वर्ष में सम्पन्न हुआ और मैंने अपने को कर्तव्य-पालन से मुक्त समझा। इस बीच काफी grand-children का जन्म हुआ और उसमें भी भाग लिया मेरा जीवन असीम व्यस्तता के दौर पर आ पहुंचा।

विदेश का आवागमन

पति देवता का स्वर्गवास

1971 में हुआ था उनके जीवन यानी 1965, 66 में बड़े बेटे का पूरा परिवार विदेश आया और 1968 में छोटे बेटा प्रदीप कुमार आ गये थे उनके आने में पूरा सहयोग दिया। 1971 से 78 तक सारा परिवार आ गया। सब के आने में और भेजने में मेरा त्याग, सहयोग की समानता थी। यहां तक कि 1977 में स्वयं भी बड़े बेटा के परिवार के [illegible] प हुआ। मैं चाहती थी कि सब लोग जाये मैं [illegible] लगाया करूंगी पर बड़े बेटा का अनुरोध था कि आप साथ में रहिये और [illegible] भारत को [illegible] में मान गई और देश छोड़ दिया।

पर मैंने यह सारा प्रोग्राम 8,10 वर्ष maximum का सोचा था यह नहीं समझा कि

परिवार यहीं बस जायेगा। धीरे २ समझ में आने लगा तब property की चिन्ता हुई कौन देखेगा? कौन सम्हालेगा? अपना स्वास्थ्य बिगड़ा उम्र बढ़ती गई दो trip में २ घर बेचा एक मकान जिसमें 23 वर्ष permanently रही थी और 21 वर्ष का अधिकतर आवागमन रक्खा जब 77 के बाद यहां से जाती थी तब भी वहां अवश्य रुककर maintain कर आती थी। अन्त में 86 में उसका मोह-माया त्याग कर आधी कीमत पर बेच दिया।

जीवन की हानियां

धन की हानि में आभूषणों की चोरी, २, ३ मकान बनवा कर किराये पर दिया था बेचते समय हानि उठाया। Property खेती, बगीचे, जमीन, मका सभी कुछ आधे दाम पर निकाला। कुछ नहीं सम्हाल सकी यों ही छोड़ दिया इस प्रकार की धन-हानि बहुत हुई तब सहन करके दि मजबूत कर लिया। इसके अतिरिक्त मनुष्य-हानि का विस्तार क्या लिखूं? अंतिम हानि प्रिय पौत्र विनीत (सुंदर, सुयोग्य) का सहन करके पत्थर बन गई 1990 में मैंने दामाद का निधन भी इतना दुखदायी रहा कि समझ में आया कि मैं सांसारिक माया-जाल में कितनी अधिक फंसी हूं। कितना प्रयत्न किया कि इस बंधन को कम करने पर आभास यह होता है कि शरीर से कुछ कर्तव्य-पालन नहीं कर सकती फिर भी दिमागी हलचल चिन्ता, कर्तव्य-परायणता की भावना आदि में लिप्त हूं। इसका त्याग असंभव है।

मानसिक चिन्तायें तथा विचार-धारा

मैं अमेरिका में 12½ साल रह कर भी Americanized नहीं हो सकी। कितनी movies देखी, टेलीविज़न में Show देखा पर मन उतना नहीं प्रसन्न हो पाता था न संतोष मिला जितना कि रामायण जिसे श्री रामानन्द जी ने Serial में भारत में T.V. में आयोजित किया था उसे हम लोगों ने यहां रहकर V.C.R में Cassette लगा कर देखा, रामायण में जो अनभिज्ञता थी (यानी (रामायण पढ़ कर सम्पूर्ण ज्ञान नहीं था) उसे कम किया। श्री रामानन्द स्वामी से विशेष भक्ति बढ़ी और इसका आभास हुआ कि हमारे देश में कितने २ उच्च कोटि के महापुरुषों का जन्म हुआ और उन्हें सत्य व धर्म व कर्त्तव्य की पूर्ति करने में कितना त्याग उठाना पड़ा। ऐसे२ महान् आत्मा का नाम बहुत याद है पर उन्हें अपनी इस तुच्छ लेखनी से विशेष रूप से आदर- तथा उनके आदर्शों का वर्णन देना उचित नहीं समझ रही हूं क्योंकि यह कहानी मुझ जैसी साधारण जीव के जीवन के हलचल व शान्ति की खोज की है इसमें बड़े २ आदर्शवादी महान पुरुषों की व्याख्या लाकर उनका निरादर नहीं करना है।

कई वर्ष पहले से यह आभास हो चुका कि यहां मेरे परिवार के जो लोग हैं वे भारतवर्ष वापस नहीं जायेंगे मैंने कभी विरोध भी नहीं किया क्योंकि मैं जानती हूं यह प्रस्ताव किसी को ठीक नहीं लगेगा न कोई मानेगा मुझसे कोई वाद विवाद नहीं करेगा क्योंकि सभी कुछ आदर करते हैं केवल हमें समझा दिया जायेगा और मैं मान लूंगी तो प्रस्ताव कोई भी अधिकतर ऐसा नहीं सामने लाना है कि कोई अधिक विरोध करे। इस देश के Standard of living, भोजन, व सब luxury सभी को जो प्राप्त है उसका कोई Comparison भारतवर्ष से नहीं है। Job तनों की अच्छी है Insurance हर्दा [illegible] Loan की सुविधायें प्राप्त हैं जो आज भारतवर्ष में कोई [illegible]

समस्या खड़ा करता है उसमें यहां बहुत सुविधायें प्राप्त हैं जैसे loan से car व घर खरीद लेना बच्चों को उच्च-कोटि का विद्याध्ययन करा देना आदि। जो generation India से शिक्षा प्राप्त करके वहां का culture व idealism (आदर्शवाद) रोम रोम में भर कर आया है वह बिल्कुल Americanized तो नहीं हो जाय गा हालांकि कुछ प्रतिशत हो गये हैं मेरा अनुमान है 10% से कम और कुछ प्रतिशत बिल्कुल Indianized रह गये, अनुमानित 5% शेष 80 या 85% बीच में फंसे हैं उसमें से यानी 40% out of 85% असंतुष्ट, इधर उधर की लहरों के बीच गोते लगा रहे हैं। मेरी अमेरिका की दुनिया (अपनी) बहुत छोटी है केवल पढ़ने, देखने, सुनने से जो ज्ञान है वह कुछ standard या truthfulness का survey नहीं है बल्कि अपना तुच्छ-अनुमान है।

इसलिये जो generation वहां से तैयार होकर आया है वे लोग अधिक प्रतिशत अपना culture नहीं छोड़ेंगे। अधिक सम्भावना उनके next generation का है जो यहां जन्म लिये, यहां पल रहे हैं और mixed atmosphere में पल रहे हैं वे क्या बनेंगे? कहा नहीं जा सकता। कुछ लड़के लड़कियां अपना जीवन-साथी American पसंद कर चुके एक साल से काफी mixed marriages हो रही हैं ब्याह church में पहले, मन्दिर में बाद में हो रहे हैं। इसका percentage समझने या निकालने में मैं स्वयं को असमर्थ समझ रही हूं bother भी नहीं कर रही हूं। मैं social worker नहीं बनी, न कोई बड़ी समाज सुधारक बनी, मैंने ऐसी छोटी सी दुनिया में रह कर कुछ प्रयास भी नहीं किया। अपने ही घर बार, रिश्तेदार व इने गिने दोस्तों के परिवार को लेकर अधिक दिमाग इस्तेमाल में ले लेती हूं और अधिक

के आगन्तुकों का क्या होगा ? क्या हमारा निर्धन भारत
यदि अपने ऊँचे २ आदर्श, इतने ज्ञानी, मानी सन्तान
उनके ऊँचे विचार, कार्य-कुशलता में प्रवीण, बड़े २
वैज्ञानिक व्यक्तियों से हाथ धो बैठा ? इनके परिश्रम
व Intelligence का कुछ भी लाभ उस देश को क्या
नहीं मिल पावेगा ? कितना अभागा देश है
जो अपने कार्य-कुशल संतान को देश से हटा
कर मूर्खों द्वारा देश का हर प्रकार का manage-
ment चला रहा है वह चाहे Parliament हो
या Industries या Court work या business
या समाजसुधार। सभी कुछ अवनति का शिकार बन
रहा है। Corruption व dishonesty का अधिक
संचार हो गया। आगे चल कर भारत का
क्या भविष्य होगा ? उसका अनमोल हीरा सब
materialwise तथा physically बाहर जा चुका
क्या मैं इनमें जान लाने के लिये कुछ प्रयास कर सक
हूँ ? नहीं, बिल्कुल नहीं, फिर इतनी चिन्ता इतना
हलचल बढ़ाने से क्या लाभ ?

मेरे बच्चे जो यहां आ गये हैं वे
अपनी २ marriages नहीं break करेंगे इतनी आश
रखती हूँ पर वे अपने बच्चों को किस ढंग की
training दे रहे हैं यह मैं जानती हूँ कि
वे अपने से better बनाने का प्रयास कर रहे हैं
उनके बच्चे ईश्वर की दया से intelligent भी हैं
पढ़ाई में तो वे shine कर जायेंगे इसकी चिन्ता
अधिक नहीं है पर culture क्या बन रहा है
इसका दिमागी हलचल लेकर मैंने अपना जीवन
व दिमाग अस्त व्यस्त कर रखा है। अपने २
बच्चों की देखभाल के लिये उनके parents (40 से 50
वर्ष की आयु वाले) सभी मान लेंगे और [illegible]

वहाँ ब्याह का आयोजन विधिवत करेंगे यह समय सभी के लिये हौसले का होगा और parents इस पर विचार भी नहीं करेंगे। ~~[illegible]~~ कि इन students बच्चों का कहाँ तक सही experience है ? क्या वे इस योग्य हो गये हैं कि ब्याह की महत्ता, (significance) उसे पुनीत। स्थायी रखना, दोनों तरफ के रिश्तेदारों से व्यवहार बना कर चलने आदि में कितनी २ कठिनाइयां, त्याग और adjustment की आवश्यकता पड़ेगी उनमें विचलित होने पर वैवाहिक-जीवन को स्थगित रखने में बाधायें खड़ी होंगी। क्या उन्होंने (parents ने) इसके लिये उन्हें training भी दिया है ? कि केवल उन्हें खुश करने के लिये पूरा सहयोग दे दिया ? उनके जीवन में यदि कोई विघ्न बाधायें आवेंगी तब वे उनको समझाना, सिखाना, रास्ते पर लाने का प्रयास करेंगे ? नहीं कर सके या नहीं सम्हल में बच्चे आये तो पश्चाताप करके दुःखी या जायेंगे ? नहीं, उन्हें अपने जीवन में भी unhappiness आवेगी और बच्चों का temporary happiness अधूरा हो जायेगा। पति पत्नी दोनों का जीवन खुशहाल नहीं हो सकेगा और बच्चे आ गये तो कुछ और जीवन भी अधूरा व विवशता का शिकार बनेगा

यह सच ही नहीं बल्कि अत्यधिक सत्य है कि बच्चों को मां बाप दोनों की विशेष आवश्यकता होती है जब वे पलते होते हैं या जब तक विवाहित जीवन में नहीं आते। इस कारण और भी दोनों को विवाहित जीवन को स्थगित व आदर्शमय रखना उचित है यदि विवाह कुछ अनजान भी हो गया हो तो उसके लिये त्यागी (sacrificing) जीवन अपनाना होगा दोनों को उन कमियों को सहन करना होगा। किसी भी कमी या विवशता का परिणाम झेलना America के बच्चों को पता नहीं है। उन्हें हर प्रकार की luxury प्राप्त है फिर वे त्याग या sacrifice को क्या

कीमत समझते हैं ? इसलिये उन्हें विवाह की महानता, stability आदि की उपयुक्त training विशेष रूप से मिलनी चाहिये।

मैंने अब तक जो कुछ लिखा केवल 3,4 दिन 2,1 घंटे समय दिया। मैंने कोई बहुत ज्ञान की बातें नहीं प्रदर्शित किया है। साधारण जीवन के कुछ problem जो आने की सम्भावना है उसी को प्रगट किया है। मेरी लेखनी में इतनी जान भी नहीं है न practice है। शायद बहुत पहले से प्रयास किया होता तो बहुत कुछ matters तैयार कर लिये होते या expression की capacity बढ़ा लिये होती। मैंने जीवन की अन्य हानियों के साथ ज्ञान-हानि भी उठाई है। मैंने आरंभ में प्रगट किया है कि मेरे ससुर जी ने कहा कि लेख आदि लिखना चाहो तो लिख कर दो मैं छपवा दिया करूँगा। मैंने कुछ दिनों स्त्री-शिक्षा व पर्दा का विषय लेकर लिखा और पचासों पन्ने लिख कर फाड़ दिया सोचा बुजुर्ग लोग पढ़ेंगे शायद न पसन्द करें। 60 की age आने से कुछ पहले से मेरे एक पारिवारिक जेठ ने बहुत बार कहा कि अपनी family की history लिख कर दो मैं अपनी family की history में add करना चाहता हूँ मैंने उसको importance नहीं दिया कि यह परिवार कोई मोती लाल या महात्मा गांधी का है नहीं कि लोग पढ़ेंगे और आदर करेंगे अपने किये हुये का स्वयं वर्णन देना कहाँ तक उपयुक्त होगा ? उनकी बातों को भी टाल दिया।

यह मेरी लेखनी जीवित हो गई केवल अपने परिवार के सदस्यों के लिये कि वे पढ़ सकें और भारतीय culture, religion की अच्छी २ विशेषतायें पढ़ कर ज्ञान प्राप्त करें और

अपने next generation पर उन विचारों को transfer करें। यह enthusiasm मुझे इधर 2, 1 महीने के भीतर अपने हृदय में आभास होने लगा वह किस प्रकार उसे लिखने में दुःख नहीं है बल्कि हंसी आती है।

मैं hospital से better होकर, आ.आई. थी नौकरी पेंशन वाली बेटी, बहुओं के साथ कई घंटे, अकेली रहने को used to हो ही गई हूं अपना समय आसानी से बिता लेती हूं। पर उस दिन मेरी बड़ी बहू को क्या सूझा था? वह शायद मुझे अकेली छोड़ कर जाने में कुछ guilty feel कर रही थी या क्या था? मैं पूरा तो नहीं समझ सकी पर उस समय मुझे कुछ तकलीफ थी और मैं उदास थी (कभी २ ऐसा हो जाता है क्योंकि पति का त्याग, देवों का त्याग, आदि सदा के लिये हो गया, कभी तो याद आवेगी ही) वह बैठ कर समझाने लगी अपने को busy रखिये, कुछ नये के लिये छोटा सा blanket बना लीजिए, थोड़ा २ सही, जब जी चाहे कुछ लिख डालिये इत्यादि कई sentences बोल गई मैंने कहा तेरे क्या आज देरी नहीं हो रही है? वह बोली हां, जा ही रही हूं कह कर चली गई। पर मैं कुछ क्या अधिक sentimental हो गई? उसका भी विजय का भी phone आया ठीक से बात नहीं कर सकी। मेरे मन में इन बातों का कुछ मलाल नहीं है। मेरे स्वभाव में क्षमता व patience का वरदान ईश्वर ने अवश्य कुछ दिया है। किसी की गलत बातों का असर होता भी है तो कुछ समय बाद अपने को सम्हाल कर नॉर्मल हो जाती हूं। किसी की बुराइयों को उसकी अच्छाइयों से cover कर लेना यह मेरा स्वभाव आरम्भ - जीवन से रहा व है इस आदत को अपनाने कारण संसार में किसी को

विरोधी नहीं बनाया न स्वयं बनी। हृदय में इच्छा प्रगट हुई कि सही में कुछ लिखने का ही प्रयास करूँ यह इच्छा अपनी बहू के मार्ग दिखाने पर हुई यह आश्चर्य-जनक बात है। मैं उसकी प्रशंसा कर रही हूँ शिकायत नहीं। यदि उसने दस वर्ष पहले यह सीख दिया होता जब कि कलम में अधिक ताक़त थी अच्छा खासा ज्ञान था तो विचार-धारा उत्तम रीति से प्रदर्शित कर सकती। अब तो दिमाग़ में जो आता है आधा भूलता रहता है कुछ पढ़ने पर आधा ही याद रहता है। Expression कुछ standard का नहीं है। जब upper middle (8th class) पास किया था हिन्दी का ज्ञान कहां अधिक था [illegible] बहुत से हिन्दी शब्द याद नहीं आते विवश होकर English लिख देती हूँ। खैर, घर वालों को पढ़ना है आम बोल चाल की तरह लिख रही हूँ। शुद्ध-हिन्दी समझने में काफ़ी लोगों को कठिनाई आ सकती है। जैसे रामायण, महाभारत की भाषा यहां के रहने वालों के समझ में कम आता है जो भारत से educated हैं तो यहां के पले बच्चे क्या समझेंगे! पूरा रामायण, महाभारत tape करके मेरा ने रखा है पर बच्चों को Summer में भी समय या taste नहीं है कि देखें न parents को समय है कि मतलब समझा करें अपने साथ दिखावें। सभी busy हैं बच्चे अलग, parents अलग। यहां तक कि मैं भी अपने को अलग busy रखती हूँ। पहले सभी बच्चे मेरे साथ कुछ खेलते थे पर अब खेल भी computerized हो गया वे उसी को सीखते गये और interest लेने लगे। इन बातों का कभी विरोध मैंने नहीं किया क्योंकि समय के धीरे धीरे से सभी कुछ

15

changes आने लगते हैं। यह तो ठीक है development होना अच्छी बात है। मैं इसकी opposition party नहीं बन गई हूँ। यदि मनुष्य का ज्ञान-वर्धन न होता तो Science आदि इतना develop कैसे करता ?

मेरे विचार-विमर्श के अनुसार जीवन या परिवार में problems ऐसी नहीं आनी चाहिये कि Indian culture का लोप हो जाय। इसका सम्बन्ध High education से नहीं है। Culture, truth, religion, sincerety आदि का संचार परिवार से प्राप्त होना चाहिये। जब परिवार का सम्पर्क नहीं रहेगा तो बच्चे किस प्रकार कुछ सीखेंगे ? जब तक हाई स्कूल (यहाँ का XII) पढ़ते हैं घर में कुछ ही सीख पाते हैं। कालेज जाते ही घर का साथ छूटते ही आज़ाद होकर मनमाना करने लगते हैं Parents जो बचपन से हाई-स्कूल तक समय नहीं दे सके वे बाद में क्या करेंगे ? बच्चों का साथ 80% Americanized लोगों से हुआ जो कई देशों से आये हुये हैं। इसलिये parents को चाहिये कि XII तक जब तक वे घर में कुछ देर साथ दे सकते हैं बच्चों का Culture, religion, behavior को पक्का कर दें यदि वे पूरी तरह घर की शिक्षा पा चुके हैं वे limit के बाहर नहीं जायेंगे। मुझे अपने बेटों, बेटियों, दामादों व बहुओं के लिये कोई डर या सम्भावना अधिक नहीं है क्योंकि देख रही हूँ कि उनकी religious mentality, sobriety बढ़ती हुई दिखाई पड़ रही है। मेरी शुभकामनायें व आशीर्वाद उनके साथ हैं ईश्वर उन्हें सुखी रखे।

16

मुझे केवल आपको यही message देनी है कि बच्चों को शिक्षा-प्रदर्शन कराने में कुछ समय देकर उन पर अपने culture, religion, family prestige, behavior आदि का विकास करावें।

इन लोगों का अधिकतर परिवार यहाँ आ गया है कम से कम एकता का भाव, एक दूसरे में यदि कोई कमी देखें उसे ignore करना, किसी के साथ समय २ पर कैसा उचित बर्ताव करना चाहिये यह सब शिक्षायें बच्चों को दिया करें ताकि उनमें परिवार की इज्जत, प्यार तथा डर रहे कि वे कोई गलत step न लें क्योंकि उनपर पारिवारिक बंधन है। यह परिवार ईश्वर की कृपा से इतना backward या rigid नहीं है कि उनके जीवन के develope होने में या career बनाने में बाधक बने पर limitation के अंदर रहने की training घर ही में प्राप्त हो सकती है। Career बनाने में केवल धन-प्राप्ति ही नहीं देखना चाहिये Career में धन, जीवन-साथी, parents, grandparents सभी का ध्यान रखना आवश्यक है। आप लोग संसार के best country में आ गये हैं इसमें रह कर ऊँचा career बना हुये पर Indian मान, प्रतिष्ठा, परिवार, parents, धर्म, व्याह, बच्चा सभी अनुकूल (favorable) बनाने की चेष्टा करिये।

मेरी ये शुभाशायें तथा शिक्षा Indian society के लिये है अपने पूरे परिवार के लिये specially है ही। मेरे परिवार में अभी तक कोई ऐसा change या event नहीं हुआ है कि मैं अपने विचारों व जीवन में परिवर्तन लाया हूँ। यह इसलिये Society की change

देखने सुनने व पढ़ने से मन गई है। जब कि मुझे संसार से विरक्त होना सीखना चाहिये मैं उसके लिये प्रयास करती हूं लेकिन जितना होना चाहिये उससे बहुत पीछे रह गई हूं। आरम्भ से ही जीवन में कर्तव्य-पूर्ति, घर बाहर का प्रबन्ध, विद्याध्ययन, बच्चों का मुंडन, ब्याह संस्कार आदि में इतनी उलझी रही कि अब तक कुछ अधिक free नहीं हो सकी। परिवार के प्रति अब मेरा कोई विशेष कर्तव्य शेष नहीं है लेकिन मैं अभी तक अपने को परिवार में mentally अधिक व्यस्त रखती हूं शायद संसार का यह नियम है कि वह आसानी से अपने को गृहस्थ-जीवन से परे नहीं रख पाता या इसे इंसान की weakness कहा जा सकता है। विरले ही इन झमेलों से विरक्त हो पाते हैं और अपना समय ईश्वर-भक्ति, देश-भक्ति या प्रवचन आदि में बिताने लगते हैं। ऐसे भी लगता है मायावी धंधा, लालच आदि से विरक्त नहीं हो पाते हैं।

इतना लिखने के पश्चात मैं सोच रही हूं कि जिसकी कृपा, आशिर्वाद, धर्म, कर्म, पूजा आदि के फल स्वरूप मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया मैंने अकेले कुछ नहीं किया मुझे अपने श्रेष्ठ ससुर जी का आशिर्वाद व पति जी का सहयोग प्राप्त था। उससे भी अधिक मुझे ईश्वर की कृपा, मदद तथा भरोसा भी था। इसका वर्णन नहीं देना ठीक लगता है मुझे कुछ ईश-प्रेरणा या भक्ति-भावना का प्रचार नहीं करना है बल्कि मन ही मन यह भावना है और सोचती हूं कि कोई २ काम बिना मेहनत व प्रयास के समय २ होता गया उसमें परमेश्वर का पूरा हाथ था। मेरे ससुर जी प्रतिष्ठित दानी, भोला तथा आदर्शवादी थे उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हें मेरा धर्म-कर्म मिलेगा वह मिला और उससे बहुत कुछ मिला। मैं परोपकारी जीव थे बहुतों को

पढ़ाया, गरीबों को मदद तथा अन्य good qualities
थीं साथ २ अपने पैसों को भी अच्छी तरह hand
किया और बहुत पैसे पैदा किया। उनके पुत्र बहुत
सत्यवादी, धार्मिक, पूजा पाठ तथा किताबों से प्रेम रखते थे
सांसारिक माया-जाल में लीन नहीं थे मेरी तरह पर
देखने में लगता था कि वे अधिक परवाह नहीं करते
वास्तव में ऐसा नहीं था, देखने में सभी कुछ rig
मुझे दे दिया था पर मैं क्या करती हूँ उन्हें सब
रहता था। मैं जब बताती कि यह काम ऐसे रह
तो कह देते कि हाँ ठीक है जो तुम कर रही
मैं समझती हूँ कि वे हस्तक्षेप इसलिये नहीं करते थे कि
उनके बचपन से उनके parents साथ २ पर, दूसरों के
साथ तथा emergencies या किसी २ अवसरों पर खा
में कई बार grand-scale पर खर्च खराब
करते रहते थे, उससे तो कम ही मैं करती थी २
मुझे वे economical ही समझते थे, बोलते क्या ?
उनके इस व्यवहार तथा सीधापन से मुझे बहुत
सहूलियत थी। अपने बजट के अनुसार लिखर बना
कुछ उससे अधिक भी खर्च हो गया तो कोई बो
वाला नहीं था। न कभी अविश्वास किया न हिसाब कि
देखा। कभी २ मैं ही कहती थी कि account देख
लीजिये कैसे २ क्या हुआ ? तो बोल देते कि हमें
पता है हिसाब क्या देखना है। उनके पास खेती,
बाग, बगीचे, मकान तथा जंगल की property बहु
काफी नाना के यहाँ से प्राप्त थी जिसमें abolition
समय काफी हानि उठाना पड़ा। इसके अतिरिक्त व
का कारिन्दा ईमानदार नहीं था। स्वयं अधिक समय
नहीं दे सकते थे। पैसों पर कुछ ध्यान था कुछ
gout के शिकार हुये कुछ स्वभाव भी रईसी था
धूप में देर तक खड़ा नहीं हो सकते थे। खेती

आदि के लिये कुछ course type की देखभाल या
supervision होता था गाँव गिरांव काफी interior
में village में था वहां जा २ कर साल में २,३
बार जाकर manage करते थे पर कार्य-कर्त्ता
honest न होने कारण पूरा profit नहीं हो पाता
मैंने कहा जब आप नहीं सम्हाल पा रहे हैं
तो बच्चे क्या करेंगे? उन्हें पढ़ाई में regular
रहना है उसके बाद job पता नहीं कहां करेंगे
तो गांव कहां जायेंगे? उत्तम है dispose off करके
पैसे लाइये। इसे उन्होंने किया लेकिन उसे भी कीमत
घटा २ कर विक्रय करना पड़ता था कारण उनके चचेरे
नाना व मामा थे उनको भी बनारस से आकर
manage करना कठिन लगता था व अपना बहुत
कम कीमत पर स्वतन्त्र करते जा रहे थे इस
प्रकार पूरी property की कीमत घट जाती थी और
धन की बहुत हानियां उठाया।

मेरे जीवन या कार्यों को सुलभ बनाने में जो
कठिनाइयां आती रहीं उसे समयानुसार face
करते हुये संतुष्टि की भावना भी जागृत हुई जो कुछ
हुआ, ठीक है, ईश्वर के इच्छानुसार इतना ही सम्भव था
यह भी नहीं कि कुछ सफलता नहीं मिली। सभी बच्चे
अपने अनुकूल बन कर पढ़ाई में तल्लीन रहते थे, उन्हें
बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त था, ईश्वर की मदद थी, वे
योग्यता प्राप्त किये और धीरे २ उन्नति-शील बनते गये
बेटियों की शादियों की चिन्ता बहुत थी पर वह भी
बड़ी सुगमता से हल होता गया। इसमें मैं क्या कहूं।
भगवान की दया, उनके बाबा का धर्म-कर्म, पिता का
पूजा-पाठ यही सब सर्वोपरि था व है मैं तो केवल
easy going duty हो दे सकते थे वही किया।

कितने रिश्तेदारों ने कहा कि आप बहुत

expert हूँ आप शादी-ब्याह बहुत आसानी से तय करती
कुछ हमें भी help करिये। मैं अपनी कोई विशेषत
नहीं समझी न समझती हूँ पर सोचा कि कुछ दूस
के साथ भलाई करना जरूरी है इसमें interest
भी बढ़ा इसके लिये कुछ करती भी हूँ पर किसी लड़
की शादी तय कराने में अभी तक सफलता नहीं मिली
इसका दुःख होता है। अपने कर्तव्य-पालन को
इतने कम समय में इतनी आसानी से पूरी कर लेन
में अपना कोई credit नहीं समझती इसमें
भगवान की कृपा व पूर्वजों के सत्कर्मों का फल
प्राप्त किया व करती गई।

अपने पति के स्वर्गवासी होने के परिणा
स्वरूप मुझे सबसे अधिक चिन्ता तीन कुमारी
बेटियों की थी। वह उनके निधन के बाद 2 वर्ष
अन्दर उनका विवाह सम्पन्न हुआ। इसमें क्या
उनके विशेष रूप से पूजा-पाठ का फल नहीं कह
जायेगा? जो जिम्मेदारी उन्होंने दी थी वह उनको आप
थी जो फूल के ~~तरह~~ समान हल्की हो गई और
आनन फानन मैंने पूरी की, यह उनके सत्कर्मों
का फल मिला। साथ में मैं उन बच्चों (बेटा, दाम
और रिश्तेदारों के सहयोग के लिये आभारी हूँ
तथा उन्हें धन्यवाद व आशीर्वाद देती हूँ जिस
प्रकार उनके प्यार व सहयोग से मेरी ये duties
सुगम व आसान हो गई थी ईश्वर उन पर भी
दया करे और उनको अपने 2 कर्तव्य-पालन में
सफलता प्रदान करे।

यह मेरे जीवन के रूप, के changes तथा
विचारों का संग्रह पिछले बृहस्पति से आज बृहस्पति (केवल
एक सप्ताह) तक का है। मैंने अधिक समय भी नहीं दिय
नहीं किसी की रचना का सहारा लिया न पारिवारिक

21

व्यक्तियों से मदद लिया। केवल मन की भावनाओं का प्रदर्शन ईश्वर की प्रार्थना करके आरम्भ किया था इसलिये इसे इसी सूरत में photostat करा के अपने पारिवारिक सज्जनों को अपनी message की तरह एक एक copy सभी को बांटने का प्रयास करूंगी। चूंकि इसमें ईश्वर की प्रार्थना आरम्भ में है इसलिये इसके पहले मैं किसी का कुछ टीका टिप्पणी नहीं लिखवाना चाहती इतना अवश्य चाहती हूं कि कोई भी परिवार का सज्जन अपने विचारों से इसे उत्तम व interesting बनाना चाहे तो इसके बाद अपना page लिख कर जोड़ दे यदि कोई आलोचना हो तो वह भी बाद ही में रक्खे क्योंकि यह किसी योग्य लेखक की रचना नहीं है बल्कि मनोभावना के वेग को साहित्य तथा स्थगित करने की प्रेरणा है कोई भाषा की अनुपमता या सुंदरता भी नहीं है कि उसे उस standard से judge किया जाय।

पर मैं चाहूंगी कि इसमें परिवार के सदस्य अपनी योग्यता का प्रदर्शन अवश्य करें ताकि इसको value दिया जाय monetary नहीं बल्कि आदर सहित interest लेकर पढ़ें और सदस्यों के knowledge व experience से लाभ उठावें। यह मेरी इच्छा और अनुरोध अपने इस मेरे परिवार से है।

अब मैं इसे आज बृहस्पति को समाप्ति का रूप दे रही हूं। यदि मेरे मन की अशान्ति व हलचल दूर नहीं हो सकी तो शान्ति की खोज में फिर कुछ और pages लिखूंगी। मेरे पास भी समय की कमी है जो चाहती हूं कर नहीं पाती हूं स्वास्थ्य की विवशता है पैरों से, हाथ व मस्तिष्क नहीं अस्वस्थ है ईश्वर से प्रार्थना है कि जब तक हूं कम से कम इतनी freedom बनी रहे

कि अपने कार्यों के लिये असमर्थ (dependant) न बनूं।
ईश्वर तुम्हें बार, २ धन्यवाद है तुमने मुझे सफलता
दी हानि लाभ दोनों उठाया जो कि संसार में आकर
सभी को झेलना है। पर एक सुंदर परिवार सजा
कर खड़ा कर दिया यह संतोष व सफलता का
विषय है। श्रेय तुम्हारा है बाद में सभी सदस्यों व
उन्हें भी प्रेरणा का संचार तुमने दिया। ईश्वर
की शक्ति हमें प्रदान करो। हे ब्रह्मा, विष्णु, महेश,
गणेश, सीता राम, राधे श्याम, पार्वती शिव, लक्ष्मी जी
सरस्वती जी का वास उस परिवार के सभी
सदस्यों के घर रहे। साथ में मेरी शुभ कामनायें व
आशिर्वाद। सभी देवताओं को आदर युक्त प्रणाम

एक तुच्छ जीव की
जीवन कहानी
Vidyawati Srivast